स्नातक (प्रतिष्ठा)

तृतीय खण्ड

पत्र - सप्तम (VII)

द्वितीय व्याख्यान

डा० राज कुमार राय
सहायक प्राचार्य
मैथिली विभाग,
विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर

काव्य - हेतु : काव्य निर्माणक मुख्य हेतु

काव्य-हेतुक प्रसंग संस्कृत विविध आचार्य लोकनिक मतक सम्यक अध्ययन ई स्पष्ट करैत अछि जे हिनका लोकनि द्वारा काव्य निर्माणक मुख्यत: तीन टा हेतु मानल गेल अछि —

1. प्रतिभा
2. व्युत्पत्ति वा निपुणता एवं
3. अभ्यास

1. **प्रतिभा** :— प्रतिभा काव्यक मूल कारण अछि। एकरा द्वारा कवि नव-नव अर्थक उन्मेष क अपन कल्पना शक्तिकेँ उन्मीलित करैत अछि। ई मुख्य रूपेँ दुई प्रकारक होइत अछि - सहजा एवं उत्पाद्या। सहजा प्रतिभा जन्मजात होइत अछि। उत्पाद्या प्रतिभा मन्त्र एवं देवानुग्रह आदिक परिणामस्वरूप उत्पन्न होइत अछि। ई उपार्जित होइत

Scanned with CamScanner

अछि। प्राय: समस्त आचार्य अग्निपुराणकारक द्वारा प्रस्तुत एहि तथ्यक समर्थक छथि जे -

नरत्वम् दुर्लभम् लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्व दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा॥

अर्थात एक त मनुष्य जीवन प्राप्त करब दुर्लभ अछि, ओहुमे विद्यासम्पन्न होयब आओर दुर्लभ अछि, विद्या सम्पन्न रहितहुँ कवि बनब आओर दुर्लभ अछि, आओर कवि बनियो क शक्ति सम्पन्न व प्रतिभा सम्पन्न होयब आओर दुर्लभ अछि। ई प्रतिभा वा शक्ति पुर्वानुभवक आधार पर कविक सृजन करबैत अछि।

2. व्युत्पत्ति वा निपुणता :- संस्कृत आचार्य लोकनिक अनुसार व्युत्पत्ति वा निपुणता समानार्थक शब्द अछि। ई निपुणता वा व्युत्पत्ति दुई प्रकारक होइत अछि - शास्त्रीय एवं लौकिक। शास्त्रीय व्युत्पत्ति अध्ययनजन्य अछि एवं लौकिक व्युत्पत्ति लोक निरीक्षण कारणें सम्भव होइत अछि। लोक निरीक्षण, शास्त्रक मनन एवं चिन्तन तथा काव्य परम्पराक अध्ययन कयलाएँ कविमे निपुणता अबैत अछि। शास्त्रीय व्युत्पत्तिक द्वारा कविक कथनमे सौन्दर्य एवं व्यवस्था अबैत अछि तथा लौकिक व्युत्पत्तिक द्वारा अभिव्यंजनके

Scanned with CamScanner

समुचित रूपेँ उपस्थित करब चाहत अछि। लोक एवं शास्त्रक जेँ कोनो सीमा नहि अछि तेँ व्युत्पत्तिक सीमाक परिकल्पना सेहो असम्भव अछि। तखन शास्त्र ज्ञानक अभावमे लोक ज्ञान सेहो निरर्थक अछि कारण शास्त्रेकेँ यथार्थ लोचन मानल गेल अछि –

सर्वस्य लोचनं शास्त्रम्।
यस्य नास्त्यन्धएव सः॥

3. अभ्यास :– संस्कृत आचार्यलोकनिक ई मान्यता छनि जे काव्यज्ञलोकनिसँ शिक्षा प्राप्त क' काव्य - रचना मे दिस प्रवृत्त भेलाउँ काव्यक सौष्ठव अबैत अछि।

संस्कृत आचार्यलोकनिक सदृश पाश्चात्य विद्वानलोकनि द्वारा सेहो काव्य-हेतुक प्रसंग पर्याप्त विचार कयल गेल अछि। ओहि विचारक जे मुख्य रूपेँ एहि प्रसंग अपन मत प्रस्तुत कयने छथि ताहिमे प्रमुख छथि - अरस्तु, हीगेल, क्रोचे, एवं फ्रायड आदि।

* अरस्तु'क अनुसार काव्य एकटा कला अछि, ओकर एकटा निश्चित रीतिविधान अछि। हिनक

Scanned with CamScanner

अनुसार मानव-स्वभावक एकटा प्रमुख प्रवृति अछि अनुकरण करब आओर इएह अनुकरण प्रवृति साहित्य रचनाक मूल कारण अछि।

* हीगेल - हिनक मान्यता अछि जे मनुष्यक सौन्दर्य वृति कोनो काव्यक मूल प्रेरणा अछि। सौन्दर्यानुभूतिक क्षणमे कविक आत्मामे आनन्दक जाहि प्रकारक स्रोत आविर्भूत होइत अछि ओकरे उच्छलन काव्य अछि।

* क्रोच :- हिनक मान्यता अछि जे मानव मनमे जगतक नाना पदार्थक प्रतिक्रिया स्वरूप अनेक छायाचित्र घुमैत अछि। अनुभूतिक किछु विशेष क्षणमे ओकरा अभिव्यक्त क' देब ओकर मानसिक स्वास्थ्यक हेतु अनिवार्य अछि आओर ओएह अभिव्यक्तिक इच्छा कोनो काव्यक मुख्य हेतु अछि।

* फ्रायड :- फ्रायडक अनुसार मानवीय वासनाकेँ जखन प्रत्यक्ष जीवनमे तृप्ति नहि प्राप्त होइत अछि तखन ओ अन्तर्मनमे दबि जाइछ तथा पुनः जखन ओकर मन जागृत नहि रहैछ तखन ओ अपनाकेँ परितृप्त करबाक प्रयत्न करैछ।

Scanned with CamScanner

अतः फ्रायडक अनुसार अभिभुक्त कामवासना काव्यरचनाक मुख्य हेतु अछि।

निष्कर्षतः कहल जा सकैछ जे मानव एकटा मननशील प्राणी अछि। ओ जखन सांसारिक वस्तु सभक सम्पर्कमे अबैत अछि तँ ओकरा देखि ओ तन्मय भ' जाइत अछि तथा तन्मय प्रधान मननशीलता ओकरासँ काव्यक रचना करबा दैत अछि। काव्यक मर्यादित उद्भाविका वा हेतु प्रतिभे अछि। प्रतिभाक संग व्युत्पत्ति एवं अभ्यास सेहो अपन योगदान द' कवि द्वारा ओहन काव्यक सृजन करा दैत अछि जकर महत्व सार्वकालिक एवं सार्वजनिक होइछ।

स्रोत:- मैथिली काव्यशास्त्र - डा० दिनेश कुमार झा।